बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - V (a)
प्रकरण - शान्ति शिक्षा
व्याख्यान सं. - 02

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

शान्ति शिक्षा से सम्बंधित शैक्षिक प्रयास

भारत में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करते हुए शिक्षा जगत में अनेक प्रयास किये गए। शिक्षा के क्षेत्र में समय-समय पर गठित विभिन्न आयोगों व समितियों , जैसे - **राधाकृष्णन आयोग** (1948 -49), **मुदालियर आयोग** (1952 -53), **प्रकाश समिति** (1959), राममूर्ति समिति (1992), **चव्हाण समिति** (1999) ने शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मूल्य शिक्षा को प्रस्तावित करने की। **नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क** (NCF - 1975, 1988, 2000, 2005) में भी मूल्यों पर आधारित उपागमों को शिक्षा में एकीकृत करते हुए शांति शिक्षा पर जोर दिया गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि भले ही मूल्य शिक्षा के अंतर्गत शान्ति शिक्षा सम्बतत्वों को देखा जाता है, किन्तु यह इसका पर्याय नहीं है। शान्ति शिक्षा का क्षेत्र कहीं अधिक व्यापक है।

NCF 2005 के शब्दों में "शान्ति शिक्षा के अंतर्गत ही समस्त मूल्यों की शिक्षा को समविष्ट किया जा सकता है, क्योंकि सभी मूल्यों के अंत में अहिंसा और शान्ति का ही स्वरुप विद्यमान रहता है। शान्ति के लिया शिक्षा नैतिक विकास के साथ-साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोणों और कौशलों के पोषण पर बल देद्श्य है, जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बनाये रखने के लिए आवश्यक है। इसमें जीने का हर्ष, प्रेम, उम्मीद और साहस के आतंरिक संसाधनों के साथ व्यक्तित्व का सम्मान शामिल है। सामाजिक न्याय शांति का महत्वपूर्ण घटक है..... " (पृ. 70)

शान्ति शिक्षा के पाठ्यक्रम को उपरोक्त आधार पर तीन स्तरों पर निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गए सकता है :-

प्राथमिक स्तर पर -

i) नैतिक जीवन सम्बन्धी कहानियाँ और कवितायें।
ii) विभिन्न धर्मों तथा संस्कृति से सम्बंधित कहानियाँ।

जूनियर स्तर पर -

i) उन महापुरषों के जीवन चरित्र का विवरण जिन्होंने शांति की स्थापना हेतु कार्य किया है।
ii) विश्व की शांति हेतु विभिन्न धर्मो की भूमिका

हाई स्कूल स्तर पर -

i) शान्ति के प्रत्यय का अर्थ।
ii) शांति की स्थापना की आवश्यकता और महत्व।
iii) परिवार, समाज, और विश्व में शांति स्थापना का अर्थ।
iv) UNO, UNESCO , रेड क्रॉस तथा अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ।
v) युद्ध और हिंसा के कारण तथा मूल्यांकन।

अध्यापक शिक्षा एवं शान्ति शिक्षा का सहसम्बन्ध

शांति शिक्षा के उद्देश्यों द्वारा छात्रों का ध्यान मानवीय संबंधों की तरफ आकर्षित किया जा सकता है। चूँकि शिक्षक ही भाई पीढ़ी का प्रेणास्रोत होता है, वही छात्रों को प्रारम्भ में शांति, अहिंसा आदि के मूल्यों को छात्रों में अंकुरित कर सकता है। यह तभी संभव है जब प्रत्येक शिक्षक स्वयं संबंधों की गहराई को समझेगा, मनुष्य के साथ मनुष्य के सहयोग को बढ़ावा देगा , एक-दूसरे की पीड़ा में अपनत्व का बोध होगा।

प्रसिद्ध विचारक **जे. कृष्णामूर्ति** के शब्दों में, "शांति व सत्य की खोज के लिए नि:संदेह हमारे अंदर के थे पड़ोसियों के साथ होने वाली कलह से मुक्ति का होना आवशयक है। जब हमारे अपने अंदर कलह नहीं होती तो हम बहार भी कलह में नहीं होते। यह ही है जो बहार प्रक्षिप्त होकर बिश्व संघर्ष बन जाती है।"

शान्ति शिक्षा का उद्देश्य छत्रों को केवल बौद्धिक उचाईयों था पहचान नहीं बल्कि उनके आत्मज्ञान के विस्तार में भी सहायत करना है, जिससे कि वे अच्छे इंसान बने, एवं जीवन में आनेवाली सभी बाधाओं का निवारण करने एम् सक्षम बने। इस प्रकार के परिवर्तन का गुरुतर दायित्व शिक्षक पर है और यह तभी सम्भव है जब भावी शिक्षक स्वयं में परिवर्तन करेंगे। **NCF 2005** में भी भावी शिक्षकों की मनोवृत्ति, मूल्यों और कौशलों को विक्सित करने पर बल दिया गया है।

निष्कर्ष

शान्ति शिक्षा निश्चित रूप में मानव जाति की रक्षा और कल्याण में अपना सहयोग देगी। शांति शिक्षा के आभाव में ही मानव संवेदना अमानवीय रूप लेती जा रही है विश्व में शान्ति और बंधुत्व की भवना का विकास तभी संभव है शांति शिक्षा के महत्व को शिक्षा जगत के प्रत्येक स्तर से जोड़ा जाए। शिक्षक एवं शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को अपना दायित्व पहचानते हुए मनावत को बचने के लिए समर्पित भाव से आगे बढ़ना होगा।